महान आदेश की

पुस्तिका

जाओ और चेले बनाओ

मत्ती 28:19

बिषय सूची

महान आदेश की पुस्तक 5

1. महान आदेश क्या है? 5

2. बाइबिल में महान आदेश का कहाँ उल्लेख किया गया है? 5

3. महान आदेश का महान परिणाम क्या है? 5

4. चेला कौन है? हम चेले कैसे बनाते हैं?.....5

5. जब महान आदेश कर कार्य पूरा हो जायेगा तो कैसा दिखाई देगा? 6

6. महान आदेश के कार्य को पूरा करने के लिए किस चीज़ की अवश्यक्ता है? 6

7. महान आदेश को पूरा करने का चार खेत का उदाहरण क्या है? 6

8. खाली खेत क्या है? 7

9. हम खाली खेत को कैसे तैयार करते हैं? 7

10. लोगों के दिल को FRAN प्रार्थना के द्वारा तैयार करें......8

11. मैं प्रार्थना यात्रा के लिए कैसे तैयारी करूँ? 8

12. हम बीज को कैसे बोयें? मैं सुसमाचार को कैसे साझा करूँ? 9

13. मुझे अपनी व्यक्तिगत गवाही या कहानी कैसे तैयार करनी चाहिए? 10

14. मैं किसी को उद्धार के अनुभव तक कैसे ले जा सकता हूँ? 11

15. सुसमाचार साझा करते समय आप किस प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हैं? 12

16. कुछ नमूना कथन क्या हैं जिन्हें आप सुसमाचार साझा करते समय कह सकते हैं?.....12

17. उद्धार के अनुभव के तुरंत बाद मुझे नए विश्वासी को क्या सिखाना चाहिए? (तत्काल शिष्यत्व).....12

18. अल्पकालिक शिष्यत्व क्या है? (पहले कुछ हफ्तों में शिक्षण).....13

19. दीर्घकालिक शिष्यत्व क्या है? 14

20. बाइबिल की कहानियों को समझने की तलवार विधि. 15

21. चर्चा और खोज बाइबिल अध्ययन (डीबीएस DBS) का उपयोग करके बाइबिल कहानियां/बाइबिल अंश पढ़ाना. 16

22. परमेश्वर की सारी योजना सिखाएं। दूध से रोटी की रणनीति (इब्रानियों **5:11-14**).....16

23. कलीसिया की स्थापना 17

24. अगुवों को तैयार करना: 18

25. कलीसिया रोपण आंदोलन क्या है? 19

26. शिष्य निर्माण आंदोलन क्या है? 19

27. शिष्य निर्माण क्या है? 20

28. आज्ञाकारिता-आधारित शिष्यता क्या है? 20

29. जब महान आदेश का कार्य पूरा हो जाएगा तो यह कैसा दिखेगा?.....21

30. महान आदेश को समाप्त करने की सरल परिभाषाएँ: 21

महान आदेश की पुस्तक

1. महान आदेश क्या है?

अ.येशु मसीह की आखिरी आज्ञा.

2. बाइबिल में महान आदेश का कहाँ उल्लेख किया गया है?

अ.मत्ती 28:18-20

आ. मरकुस 16:15

इ. मरकुस 13:10

ई. लूका 24:47

उ. यहुन्ना 20:21

ऊ.प्ररित 1:8

3. महान आदेश का महान परिणाम क्या है?

अ.मत्ती 24:14

आ. प्रकाशितवाक्य 7:9

इ. प्रकाशितवाक्य 5:9

ई. दानिएल 7:14

4. चेला कौन है? हम चेले कैसे बनाते हैं?

एक चेला मसीह का आज्ञाकारी अनुयायी है, जो और चेलों को तैयार करेगा. हम उन्हें येशु की हर बात का पालन करना सिखाकर चेला बनाते हैं. इसमें सुसमाचार बाँटना, उनको येशु की आज्ञाओं और बाइबिल की अन्य शिक्षाओं को पालन करना सिखाना, विश्वासयोग्य चेलों के समूह को स्थापित करना शामिल है, जो पवित्र आत्मा की अगुवाई में एक कलीसिया के रूप में प्रभु की आराधना करते हैं.

5. जब महान आदेश कर कार्य पूरा हो जायेगा तो कैसा दिखाई देगा?

अ.कोई व्यक्ति नहीं छूटेगा (2 पतरस 3:9, 1 तिमुथियस 2:4)

आ. कोई स्थान नहीं छूटेगा (रोमियो 15:19-23)

इ. कोई भाषा नहीं छूटेगी (दानिएल 7:14)

ई. कोई जाति नहीं छूटेगी (मत्ती 28:19)

6. महान आदेश के कार्य को पूरा करने के लिए किस चीज़ की अवश्यक्ता है?

अ.टूट पड़ने वाली प्रार्थना (बाल-पराजीम प्रार्थना)

आ. मिलकर काम करना - एकता (यहुन्ना 17:11, लूका 5:7)

इ. एक ऐसा आन्दोलन जिसमे कई आन्दोलन हों (प्रेरित 6:7, प्रेरित 9:31)

7. महान आदेश को पूरा करने का चार खेत का उदाहरण क्या है?

मरकुस 4:26-29 पढ़िए

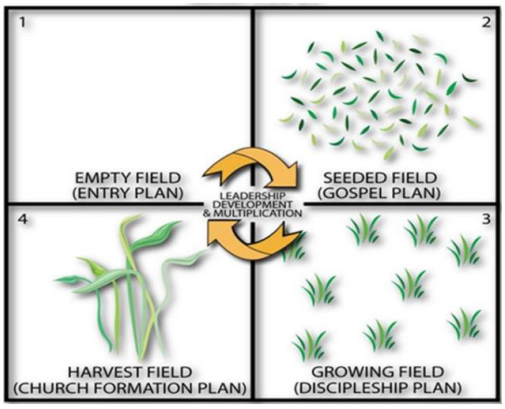

अ. चार प्रकार के खेत क्या हैं?

i. खाली खेत - खेत को तैयार करें - सुसमाचार की तैयारी (प्रचार से पहले)

ii. बीज बोया हुआ खेत - सुसमाचार को साझा कीजिये - सुसमाचार का प्रचार - (प्रचार)

iii. अंकुरित खेत - शिष्यता - (सुसमाचार की परिपक्वता)

iv. पका हुआ खेत - कलीसिया निर्माण - (सुसमाचार का प्रभाव)

आ. फसल को काटने के बाद किसान क्या करेगा?

I. दुबारा बोने के लिए सबसे अच्छे बीज को चुनेगा. (अगुवों का प्रस्शिक्षण)

II. बीज की गुणात्मक वृद्धि - सुसमाचार का बढ़ना (सुसमाचार का आन्दोलन)

इ. महान आदेश के पूरा होने के दर्शन के 9 पायदान.

8. खाली खेत क्या है?

अ.खाली लोग (मित्र, रिश्तेदार, सहकर्मी, पड़ोसी)

आ. खाली स्थान (गाँव, स्थान, पड़ोस)

9. हम खाली खेत को कैसे तैयार करते हैं?

अ.खुल जा प्रार्थना - खुले दिल, खुले घर, खुली ऑंखें, खुले कान, खुला स्वर्ग.

आ. आशीष (BLESS) प्रार्थना - बदन (BODY) के लिए, भावनाओं (EMOTIONS) के लिए, सामाजिक (SOCIAL) जीवन के लिए, आत्मिक (SPIRITUAL) जीवन के लिए प्रार्थना करें.

10. लोगों के दिल को FRAN प्रार्थना के द्वारा तैयार करें.

१. प्रार्थना यात्रा क्या है और हम इसे कैसे कर सकते हैं?

प्रार्थना यात्रा एक प्रकार की मध्यस्थता की प्रार्थना है जिसमें प्रार्थना के दौरान पास के क्षेत्र या विशेष स्थान पर यात्रा करना शामिल होता है. जैसे जैसे आप प्रार्थना यात्रा करते हैं, आपके प्रार्थनाएं आपकी अपनी चिंताओं से दूर हो कर, सीधे उस स्थान

My commitment for prayer Name:_____

#	FRIENDS	RELATIVES	ASSOCIATES	NEIGHBOURS
1				
2				
3				
4				
5				

#	FRIENDS	RELATIVES	ASSOCIATES	NEIGHBOURS
1				
2				
3				
4				
5				

FRAN PRAYER	BLESS PRAYER	OPEN PRAYER	
FRIENDS	BODY	OPEN	HEART
RELATIVES	LABOUR		EYES
ASSOCIATES	EMOTIONS		EARS
NEIGHBOURS	SOCIAL NEEDS		DOOR
	SPIRITUAL NEEDS		HEAVEN

की ज़रूरतों पर ध्यान केन्द्रित करती हैं, और आपकी आँखों को खोलती हैं कि आप उनको इश्वर के नज़रिए और दिल से देख सकें.

11. मैं प्रार्थना यात्रा के लिए कैसे तैयारी करूँ?

अ.दो या अधिक लोगों का समूह बनायें.

आ. आत्मिक रूप से तैयार रहें.

इ. लोगों और उस स्थान की ज़रूरतों को ध्यान में रखें.

ई. पवित्र आत्मा की आवाज़ के लिए अपने दिल को खुला रखें.

उ. उस स्थान और लोगों पर शांति और आशीष की घोषणा करें.

ऊ. शांति के पुरुष के लिए प्रार्थना करें और उन्हें ढूंढे.

12. हम बीज को कैसे बोयें? मैं सुसमाचार को कैसे साझा करूँ?

अ. अपने FRAN के लिए प्रार्थना करने के बाद मैं क्या करूँ?

i. उनकी कहानी सुनें, उनकी समस्या, उनके जीवन की परिस्थिति और उनकी चुनौतियों को.

ii. अपनी कहानी बताएं कि कैसे येशु ने आपको समस्याओं और चुनौतियों के बीच कैसे सहायता की है.

iii. परमेश्वर या येशु की कहानी परिस्थिति के अनुसार बताएं.

आ. बीज क्या है?

बीज येशु मसीह का सुसमाचार है.

इ. सुसमाचार क्या है?

धर्मग्रंथों के अनुसार 2000 साल पहले परमेश्वर ने येशु मसीह को इस सँसार में भेजा था, उसने पापरहित जीवन जीया, उसने लंगड़ों को चंगा किया, उसने अंधों को चंगा किया, उसने बहरों और कोढ़ियों को चंगा किया, उसने मुर्दों को जिलाया, उन्हें कलवारी पर सूली पर चढ़ाया गया, उन्हें दफनाया गया और तीसरे दिन वह फिर से जीवित हो उठे. वह स्वर्ग में चढ़ गया, और उसने वादा किया कि वह वापस आएगा. उसके नाम में पापों की क्षमा और मुक्ति है.

ई. कौन कौन सुसमाचार साझा कर सकता है?

हर नया जन्म पाया हुआ विश्वासी सुसमाचार को साझा करने के लिए योग्य है. (मरकुस 1:17)

उ. एक नए विश्वासी को कब सुसमाचार या अपने विश्वास को साझा करना चाहिए?

निम्नलिखित लोगों की तरह तुरंत शुरुआत करें.

I. सामरी स्त्री की कहानी (यूहन्ना 4:5-30)
II. दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य की कहानी (मरकुस 5:1-20)
III. बहरे और गूंगे की कहानी (मरकुस 7:31-37)

ऊ. मैं सुसमाचार किससे साझा कर सकता हूँ?

प्रार्थना के साथ दिलों को तैयार करने के बाद पवित्र आत्मा की अगुवाई में अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, सहयोगियों, पड़ोसियों और किसी अन्य के साथ सुसमाचार साझा करें.

13. मुझे अपनी व्यक्तिगत गवाही या कहानी कैसे तैयार करनी चाहिए?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें या रिकॉर्ड करें:

अ. यीशु मसीह को प्राप्त करने से पहले आपका जीवन कैसा था? (पाप, बीमारी, परेशानियां, गरीबी, दुष्टात्मा, व्यसन आदि और इसका आपके जीवन पर प्रभाव)

आ. आपने अपने जीवन में यीशु को कैसे प्राप्त किया?

I. आपको यीशु के बारे में किसने बताया?
II. आपने निर्णय कब लिया?
III. परिस्थितियों का वर्णन करें.

इ. आपके जीवन में यीशु को प्राप्त करने के बाद क्या हुआ?

I. चंगाई, मुक्ति, पाप क्षमा, आदतों में परिवर्तन, शांति आदि.
II. मसीह का आज्ञाकारी शिष्य बनना.

ई. अपने FRAN के साथ अपनी कहानी को साझा करें.

14. मैं किसी को उद्धार के अनुभव तक कैसे ले जा सकता हूँ?

अ. सुसमाचार को सरल भाषा या शब्दों में स्पष्ट रूप से साझा करें.

आ. सुसमाचार प्रस्तुति के बाद यीशु का स्वागत करने का निमंत्रण दें.

इ. सुसमाचार निमंत्रण के लिए नमूना प्रश्न.

I. क्या आप यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना चाहेंगे?

II. यदि नहीं, तो आशीर्वाद (BLESS) प्रार्थना करें।

III. यदि हां, तो उन्हें अंगीकार करने की प्रार्थना में अगुवाई करें.

ई. अंगीकार की प्रार्थना का नमूना

हे प्रभु यीशु, मैं मानता हूं कि मैं पापी हूं और मैंने अपने जीवन में बहुत सारे बुरे काम किये हैं. मैं विश्वास करता हूँ कि आप इस दुनिया में आए, मेरे लिए क्रूस पर मरे, दफनाए गए और तीसरे दिन फिर से जी उठे. मुझे विश्वास है कि आप अपने वादे के अनुसार वापस आएंगे. मैं विश्वास करता हूँ कि आपके नाम में मुक्ति और पापों की क्षमा है. प्रभु यीशु, मेरे जीवन में आइये, मेरे सारे पापों को क्षमा कर दीजिये, मुझे अपने खून से धो दीजिये. आज से मैं आपके लिए जिऊंगा. मैं आपको अपने जीवन के प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता हूं, यीशु के नाम में, आमीन.

15. सुसमाचार साझा करते समय आप किस प्रकार के प्रश्न पूछ सकते हैं?

अ.क्या आप निश्चित हैं कि आपका दोबारा जन्म हुआ है?

आ. अगर आप आज मर जाएँ तो आपका क्या होगा?

इ. आप अपना अनंत काल कहाँ व्यतीत करेंगे? स्वर्ग में या नरक में?

16. कुछ नमूना कथन क्या हैं जिन्हें आप सुसमाचार साझा करते समय कह सकते हैं?

अ. यीशु आपसे प्यार करते हैं.

आ. यीशु आपकी परवाह करता है.

इ. यीशु पर भरोसा रखें.

ई. यीशु आपको बचा सकते हैं.

उ. यीशु आपको ठीक कर सकते हैं.

ऊ. यीशु फिर वापस आएंगे.

ऋ. यीशु के आगमन के लिए तैयार रहें.

ऌ. यीशु आपको शांति दे सकते हैं.

ऍ. यीशु आपके पापों को क्षमा कर सकते हैं.

ऐ. यीशु आपका जीवन बदल सकते हैं.

17. उद्धार के अनुभव के तुरंत बाद मुझे नए विश्वासी को क्या सिखाना चाहिए? (तत्काल शिष्यत्व)

अ. मुक्ति का आश्वासन दीजिये.

I. आप परमेश्वर की संतान हैं. (यूहन्ना 1:12)

II. आपके पाप क्षमा कर दिए गए हैं. (1 यूहन्ना 1:9)

III. आपका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा गया है (प्रकाशितवाक्य 21:27)

IV. आपका नया जन्म हुआ है. (यूहन्ना 3:3)

आ. उन्हें सरल प्रार्थनाएँ करना सिखाएँ.

प्रभु की प्रार्थना एक अच्छा उदहारण है (मत्ती 6:9-13)

इ. उनको बाइबिल को पढना और उसका अध्ययन करना सिखाएं.

ई. गवाही देना सिखाएं.

यीशु ने उनके जीवन में जो किया है उसे तुरंत अपने मित्रों, रिश्तेदारों, सहयोगियों और पड़ोसियों को बताएं.

उ. उन्हें विश्वासियों के समूह या स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित करें.

यदि कोई चर्च नहीं है, तो उन्हें अपने घर में एक नयी कलीसिया शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें और प्रशिक्षित करें.

18. अल्पकालिक शिष्यत्व क्या है? (पहले कुछ हफ्तों में शिक्षण)

उन्हें यीशु की आज्ञाओं का पालन करना सिखाएं.

यीशु की सात आज्ञाएँ क्या हैं? पूरक के रूप में एक बाइबिल कहानी सिखाएं.

अ. पश्चाताप करें और सुसमाचार पर विश्वास करें. (मरकुस 1:15)

उड़ाऊ पुत्र (लूका 15:11-32)

आ. पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा लें और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करें (मरकुस 16:16)

फिलिप्पुस और इथियोपियाई खोजे (प्रेरितों 8:26-40)

इ. ईश्वर से प्रेम करो और अपने पड़ोसियों से प्रेम करो (मत्ती 22:37-39)

अच्छे सामरी की कहानी (लूका 10:25-37)

ई. नियमित रूप से प्रार्थना करें और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें. (यूहन्ना 15:7)

एक दृढ़ मित्र की कहानी (लूका 11:5 - 8)

उ. प्रभु की मेज में भाग लें और पवित्र जीवन जिएं और विश्वासियों के समुदाय का हिस्सा बनें. (लूका 22:19)

प्रभु की मेज़ की कहानी (लूका 22:14-23)

ऊ. दशमांश और भेंट दो (प्रेरितों 20:35)

विधवा के सिक्के की कहानी (लूका 21:1-4)

ऋ. जाओ और शिष्य बनाओ. (मैथ्यू 28:19)

एंड्रयू और दोस्तों की कहानी (यहुन्ना 1:43-50)

19. दीर्घकालिक शिष्यत्व क्या है?

पुराने नियम और नए नियम दोनों से परमेश्वर के वचन सिखाकर एक विश्वासी को मसीह में मजबूत और परिपक्व बनाना.

अ. प्रेरितों की शिक्षाओं से आरंभ करें (प्रेरित 2:42-47)

I. प्रेरितों का शिक्षा
II. संगती
III. रोटी तोड़ना
IV. प्रार्थना
V. चिन्ह और चमत्कार

VI. एक दूसरे के साथ ज़रुरत साझा करना

VII. स्तुति और आराधना

आ. 5 उंगली का सिद्धांत

व्यक्तिगत जीवन:

पवित्रता, ईमानदारी, खराई

पारिवारिक जीवन:

पति, पत्नी, बच्चों और माता-पिता के साथ संबंध

कलीसियाई जीवन:

कलीसिया और कलीसिया के भीतर परिवारों के परिवार के रूप में संबंध

सामाजिक जीवन:

अपने शासकों की आज्ञा मानें, उनके लिए प्रार्थना करें और उन्हें आशीर्वाद दें.

अनन्त जीवन:

यीशु का दूसरा आगमन और मृत्यु के बाद जीवन.

20. बाइबिल की कहानियों को समझने की तलवार विधि.

अ. यह ईश्वर के बारे में क्या कहता है?

आ. यह मनुष्यों के बारे में क्या कहता है?

इ. क्या पालन करने की कोई आज्ञा है?

ई. क्या किसी पाप से बचना है?

उ. क्या प्राप्त करने का कोई वादा है, क्या पालन करने के लिए कोई उदाहरण है?

ऊ. मैं कहानी से और क्या सीख सकता हूँ?

21. चर्चा और खोज बाइबिल अध्ययन (डीबीएस DBS) का उपयोग करके बाइबिल कहानियां/बाइबिल अंश पढ़ाना.

अ.पीछे देखो:

व्यक्तिगत साझा करना

I. आप किस बात के लिए आभारी हैं?

II. आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

III. एक दूसरे की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें और एक दूसरे की मदद करें.

पिछले सप्ताह की शिक्षा साझा करना

I. आपने पिछले सप्ताह क्या सीखा?

II. पाठ के आधार पर आपने पिछले सप्ताह क्या पालन किया?

III. आपने जो सीखा वह किसे सिखाया?

आ. ऊपर देखो:

I. आज का पाठ या कहानी पढ़ें.

II. चर्चा करें कि यह वचन परमेश्वर, यीशु या उसकी योजना के बारे में क्या बताता है.

इ. आगे देखो:

I. आज के पाठ के आधार पर आप क्या आज्ञा मानेंगे?

II. आप किसे सिखायेंगे?

22. परमेश्वर की सारी योजना सिखाएं। दूध से रोटी की रणनीति (इब्रानियों 5:11-14)

I. प्रतिदिन बाइबल अध्ययन और प्रार्थना की आदत डालें.

II. परमेश्वर आवाज सुने.

III. परमेश्वर की आवाज का पालन करें.

IV. आपने जो सीखा है उसे दूसरों के साथ साझा करें.

23. कलीसिया की स्थापना

अ. कलीसिया क्या है?

कलीसिया विश्वासियों का एक समूह है जो नियमित रूप से प्रार्थना, अराधना, शिक्षा और समुदाय के लोगों की सेवा और उत्थान के लिए एक साथ मिलते हैं.

आ. वे कौन सी आवश्यक चीज़ें हैं जो कलीसिया में होनी चाहिए?

I. प्रार्थना

II. गीतों और शब्दों से प्रभु की आराधना करें

III. बाइबिल पढ़ना

IV. बाइबिल शिक्षण

V. गवाही को साझा करना

VI. एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना

VII. एक दूसरे की सेवा करना

इ. कलीसिया में अगुवे कौन हैं?

I. प्रेरित, भविष्यवक्ता, शिक्षक, पादरी, प्रचारक (इफ 4:11-13)

II. डीकन, पुरनिये (तीतुस 1:5, 1 तीमु 3:8)

ई. मैं एक नयी कलीसिया कैसे शुरू कर सकता हूँ?

I. मिलने का स्थान और समय तय करें.

II. सरल कलीसिया प्रारंभ करें. जहाँ दो या तीन यीशु के नाम पर इकट्ठे होते हैं वह उनके साथ होता है.

III. कलीसिया में सब को सहभागी होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:26)

IV. दोस्तों, रिश्तेदारों, सहयोगियों और पड़ोसियों को आमंत्रित करें.

V. कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को यीशु ने जो सिखाया और आदेश दिया उसका पालन करना सिखाएं.

VI. हरेक विश्वासी को एक शिष्य और एक शिष्य निर्माता बनने के लिए तैयार करें.

VII. जब विश्वासी परिपक्व शिष्य बन जाएं तो नई सभाएं शुरू करें.

उ. मैं चर्च का कौन सा मॉडल शुरू कर सकता हूँ?

I. खरगोशों की तरह बड़ने, प्रजनन और शिष्य बनाने वाली सरल कलीसिया बनाएं.

II. प्रत्येक कलीसिया को पुनरुत्पादन करना चाहिए.

III. प्रत्येक परिपक्व शिष्य को एक नयी कलीसिया शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

24. अगुवों को तैयार करना:

अ.मैं कलीसिया को प्रशिक्षण केंद्र कैसे बना सकता हूँ?

I. नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकित होने के लिए परिपक्व विश्वासियों की पहचान करें.

II. प्रत्येक नए नियम की कलीसिया को प्रशिक्षण केंद्र होना चाहिए, जो संतों को सेवा के काम के लिए तैयार करे.

III. एक संगठित पाठ्यक्रम-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम करें.

IV. सप्ताह में एक या दो बार या महीने में एक बार से शुरू करें (प्रशिक्षण की उपलब्धता और स्थानीय सुविधा के अनुसार लचीले रहें).

V. आज्ञाकारिता-आधारित शिक्षा पर जोर दें. आज्ञाकारी शिष्यों और अगुवों के साथ जारी रखें.

VI. प्रत्येक प्रशिक्षु को आज्ञा मानने और दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करें.

VII. जब भी आप एकत्रित हों तो जवाबदेही संबंधी प्रश्न पूछें.

25. कलीसिया रोपण आंदोलन क्या है?

कलीसिया रोपण आन्दोलन (CPM) किसी दिए गए लोगों के समूह या जनसंख्या के बीच स्वदेशी कलीसिया की तेजी से वृद्धि है जो और कलीसिया को स्थापित करने वाली हों. यह विश्वासियों को दूसरों को प्रशिक्षित करने जो दूसरों को प्रशिक्षित करें, के सिधांत पर आधारित है. यह दूसरों को कलीसिया स्थापना करने के लिए प्रशिक्षित करने पर जो औरों को प्रशिक्षित करें, पर भी जोर देता है, न कि कोई केवल एक कलीसिया स्थापित करें.

26. शिष्य निर्माण आंदोलन क्या है?

शिष्य निर्माण आंदोलन (DMM) से शिष्य बनाने वाले शिष्यों की संख्या में अत्यधिक तेजी से वृद्धि हो रही है,

ध्यान इस बार पर है कि प्रत्येक विश्वासी एक पुनरुत्पादक शिष्य बन जाए. वे परमेश्वर की आवाज़ सुनेंगे और जो कुछ वे सीखेंगे उसका पालन करने और दूसरों को सिखाने के लिए प्रतिबद्ध होंगे. प्रत्येक शिष्य एक शिष्य निर्माता बन जाता है और ऐसी कलीसिया स्थापित करता है जो बहुतायत से गुणा हो जाएगी.

DMM का जोर ऐसे चेलो को बनाने पर है जो दूसरों को चेला बनाये, CPM का जोर ऐसी कलीसिया की स्थापना पर है जो और कलीसिया स्थापित करे.

27. शिष्य निर्माण क्या है?

शिष्य निर्माण एक जानबूझकर, संबंधपरक, मसीह-केन्द्रित गतिविधि है, जो प्रत्येक

विश्वासी द्वारा की जाती है, ताकि दूसरों को यीशु को जानने, बढ़ने और ईमानदारी

से पालन करने के लिए प्रोत्साहित करने और सिखाने के लिए हर अवसर का उपयोग

किया जा सके। शिष्य निर्माण प्रत्येक विश्वासी को, प्रत्येक अवसर के माध्यम से

करना होता है।

28. आज्ञाकारिता-आधारित शिष्यता क्या है?

आज्ञाकारी आधारित शिष्यता यीशु की प्रत्येक आज्ञा और शिक्षा का शीघ्र पालन करने पर जोर देता है किसी विश्वासी की परिपक्वता का स्तर उसके ज्ञान के स्तर के आधार पर नहीं बल्कि आज्ञाकारिता के स्तर के आधार पर तय होता है. यीशु ने सिखाया "जाओ और चेले बनाओ, बपतिस्मा दो और उन्हें उन सभी बातों

का पालन करना सिखाओ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है". इसलिए, प्रत्येक विश्वासी को एक चेले और एक चेला बनाने वाला होना चाहिए.

29. जब महान आदेश का कार्य पूरा हो जाएगा तो यह कैसा दिखेगा?

प्रकाशितवाक्य 7:9 के अनुसार , " हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं."

दानिय्येल 7:14 के अनुसार, "हर भाषा के लोगों ने उसकी आराधना की".

मत्ती 24:14 कहता है, "राज्य का यह सुसमाचार सारी दुनिया में सब जाति पर गवाही के तौर पर प्रचार किया जाएगा और तब अंत आ जाएगा."

30. महान आदेश को समाप्त करने की सरल परिभाषाएँ:

अ. कोई व्यक्ति नहीं बचा, कोई स्थान नहीं बचा, कोई भाषा नहीं बची, कोई जन समूह नहीं बचा

आ. जाति समूह, भाषा समूह, शहरी क्षेत्र और भौगोलिक इकाइयाँ (PEOPLE, LANGUAGE, URBAN AREAS, GEOGRAPHICAL VILLAGES दृष्टिकोण)

इ. एक विश्वासी, एक देह, एक बाइबिल और ब्रेक थ्रू (फट पड़ने वाली) प्रार्थना (4 बी दृष्टिकोण)

महान समाप्ति

क्या महान आदेश का कार्य पूरा हो सकता है?

जैसे डी.एल.मूडी ने कहा, "यह किया जा सकता है, यह किया जाना चाहिए, यह अवश्य किया जाना चाहिए."

अधिक विस्तार से शिक्षा के लिए, महान आदेश की पाठशाला के प्रशिक्षण के कार्य में अपना पंजीकरण कीजिये learnnn.com पर.

https://schoolofgreatcommissionglobal.learnnn.com/the-school-of-great-commission

महान आदेश के बारे में

यह महान आदेश पुस्तिका यीशु की अंतिम आज्ञा को समझने के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। इसका उपयोग चर्च में प्रत्येक विश्वासी को सिखाने के लिए किया जा सकता है ताकि वे महान आदेश में भाग ले सकें और मसीही परिपक्वता में बढ़ सकें।

इस पुस्तिका का उद्देश्य महान आदेश का सामान्य अवलोकन देना है न कि चर्चा किए गए प्रत्येक बिंदु का विस्तृत विवरण देना। सभी प्रशिक्षुओं को उल्लिखित बाइबिल आयतों को पढ़ने और कंठस्थ करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है... इन आयतों को प्रत्येक विश्वासी के जानने के लिए कुछ बुनियादी बाइबिल छंदों के रूप में माना जाता है।

प्रशिक्षक इस पुस्तक का उपयोग करके अपने समुदाय के सदस्यों या उनके शिष्य समुह को पढ़ाने के लिए एक सरल मार्गदर्शिका के रूप में कर सकते हैं।

इस प्रशिक्षण का पूरा उद्देश्य आज्ञाकारी शिष्य बनाना है जो यीशु की हर आज्ञा का पालन करें और दूसरों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग* हूँ।

मत्ती 28:19-20